

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें विशेष ध्यान : डॉ. संजय

11/05/2021

कानपुर। सीएसए के दीवानी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. संजय कुमार पांडेय

ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. पांडेय ने बताया कि किसान के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है। उन्होंने पशु पालकों को सलाह दी है कि कोरोनावायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक मादा पशु के

गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्म होने पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु नियमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती। यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बारंबार प्रजनन कहते हैं। माता पशु के बार-बार गर्म होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बच्चेदानी में संक्रमण होना अर्थात् तोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना, शरीर में हार्मोंस की कमी होना, सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भाधान न होना, पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना, मादा पशु की बच्चेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड

वाहिनी का बंद होना, हिमीकृत वीर्य का अनुचित रखरखाव। मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में

का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए। अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है



तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है। उन्होंने बताया कि पशुओं का दाना चारा पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान उसी दिन शाम को

डॉक्टर संजय पांडे ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो तोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बच्चेदानी की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात् वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बच्चेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गाभिन नहीं हो पाएगी। डॉक्टर पांडे ने इसके उपचार हेतु बच्चेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भाधान गन द्वारा 150-200 द्रव नॉर्मल सलाइन अर्थात् एनएस द्वारा करवाएं। एवं उसके बाद बच्चेदानी की सफाई 1ml इन्फ्लेक्सीन (ल्यूगोल आयोडीन) नामक घोल छुड़वा कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टिल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं। यदि इन्फ्लेक्सीन इन्फ्लेक्सीन (बीटाडीन) नामक घोल

करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि वह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भाधान कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकृत वीर्य का रख-रखाव तरल नत्रजन (लिक्विड नाइट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं। कभी-कभी हिमीकृत वीर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते। उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक है तो कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरूलोन इत्यादि के इंजेक्शन भी कारगर देखे गए हैं, परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना अति आवश्यक है।



कानपुर से प्रकाशित

दैनिक



इस पंजीयन संख्या : K.P.Oly-3292818-28 RNI No : UPHIN/2014/55306

आज का कानपुर

कानपुर में प्रकाशित लखनऊ, उज्जैन, नोएडा, लखनऊ खोले, इलाहाबाद, मेरठ, बारा, कोशंबी, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, रायबरेली, कानपुर ट्रेडिंग, बाराबंकी में प्रकाशित

ajkakanpur.in facebook ajkakanpur twitter ajkakanpur 9389981028 ajkakanpur@gmail.com ajkakanpur

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें ध्यान-डॉ. पाडेय

आज का कानपुर

कानपुर (विशेषकर अक्सर क्षुद्र एवं प्रीमोगिबी) विधिविद्यालय कानपुर के कुलाति डॉक्टर डॉ.आर. सिंह द्वारा क्षुद्र वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज दिनांक 10 मई 2021 को दीवानी रोड नगर निगम स्थित क्षुद्र विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पांडेय ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर पांडेय ने बताया की किसान भाइयों के लिए पशु स्वास्थ्यपूर्ण बन छोड़े हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है। उन्होंने पशुपालकों को सलाह दी है की कोरोनाकालपरम संक्रमण के दौरान पशुपालक भाई मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्भ होने पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु विषमिन्न रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार होट या गर्मी में तो जाती है परंतु कई बार उसका क्षुद्र गर्भधारण करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती। यदि मादा पशु तीन बार से अधिक क्षुद्र गर्भधारण करवाने के बाद भी गर्भ नहीं रहता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में अरंभक प्रजनन या रिपीट ब्रीडर



कहते हैं। मादा पशु के बार-बार गर्भ होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विचार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बल्लेदारों में संक्रमण होना अर्थात तोड़े या फैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें घोलान होना (शरीर में डारमोंस की कमी होना) सही समय पर मादा पशु का क्षुद्र गर्भधारण न होना (पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना) मादा पशु की बल्लेदारों में जम्पलात फिस्कर होना जैसे कि अंड खालिका का बंद होना (हिमीकुल वॉर्य का अनुचित रखरखाव)। मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में डॉक्टर संजय पांडेय ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं में जो तोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें

पीसासन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बल्लेदारों की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्रपु अर्थात वॉर्य एक दूसरे के दुरूपण हैं यदि बल्लेदारों में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु खनिज नहीं हो पाएंगे। डॉक्टर पांडेय ने इसके उपचार हेतु बल्लेदारों की सफाई क्षुद्र गर्भधारण गन द्वारा 150-200 द्रव मिलिलिटर सलाइन अर्थात एनएस द्वारा करवाई। एवं उसके बाद बल्लेदारों की सफाई 5% Lugol's Iodine (ल्यूगोल आयोडीन) नामक पोल लुट्टा कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 100 मिलीलीटर डिस्टिल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं। यदि lugol's iodine उपलब्ध नहीं है तो उसके स्थान पर ब्रह्मदुग्धदुग्ध (बीटाडीन)

नामक पोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार को होट छोड़ देने चाहिए। अगली होट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है तथा उसकी एआई करवानी चाहिए है। उन्होंने बताया कि पशुओं का दाव चांग पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुकड़ होट में आया है तो उसकी क्षुद्र गर्भधारण उभी दिन शाम को

करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को होट अथवा गर्मी में है तो उसकी क्षुद्र गर्भधारण अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि यह ध्यान रखें कि क्षुद्र गर्भधारण कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकुल वॉर्य का रख-रखाव ततल नखनन (लिफ्टिड वाइट्रोबल गैस) में लौक प्रकाश से कर रहा है या नहीं। कभी-कभी हिमीकुल वॉर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसको गुणवत्ता खराब हो

जाती है जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते। उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें लौक है तो क्षुद्र गर्भधारण के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, क्रोमालोन इत्यादि के इन्जेक्शन भी कारगर देखे गए हैं, परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार लौक है तथा हार्मोन के इन्जेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना उचित आवश्यक है

कपड़ा बाजार में फंसा अरबों का माल, सहालग के सम

आज का कानपुर

कानपुर (विशेषकर वर्षों को तरह एक बार फिर कोरोना ने कपड़ा बाजार की कमर तोड़ दी है। सूत, मुंबई, अहमदाबाद से कपड़ा खरीद कर गोदामों में रखकर बैठे कारोबारी बुरी तरह परेशान हैं। इनके साथ ही असहज के जिलों में जहाँ कानपुर से ही कपड़ा, सड़ी जाती है, वहाँ भी दुकानदार परेशान हैं क्योंकि उन्हें भी कपड़ा नहीं मिल पा रहा है। गर्मियों की सहालग कपड़ा बाजार के लिए सबसे महत्वपूर्ण होती है। गंग मेला के बाद

बाजार खुलने ही बिक्री शुरू हो जाती है। यह बिक्री इसके बाद जब तक चलती रहती है जब तक की गर्मी की सहालग चलती है। सामान्यतः पर वह जून के अंत या जुलाई की शुरुआत तक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में चमल बटने के बाद लेनों की हाथ में नकदी होती है, इसलिए ज्यादातर लोग गर्मियों में ही परिवार के वैकल्पिक कार्यक्रम तय करते हैं। इस बार भी गंगा मेला के बाद कपड़ा बाजार शुरू हुआ तो रोज 50 करोड़ रुपये के आमपाम की बिक्री हो रही

थी। कोरोना संक्रमितों की संख्या बढ़ने के दौरान भी सहालग और ईद को लेकर बिक्री तेज थी लेकिन पहले संक्रमण की तरह से बंदी और बाद में सामन की तरफ से लगे कर्फ्यू ने बाजार की कमर तोड़ दी एक मई से बंद हुआ बाजार दोबारा अभी तक नहीं खुला है। सहालग के दिन जैसे-जैसे गुजरते जा रहे हैं, कारोबारियों के माने पर शिंत की लकीरें बढ़ती जा रही हैं। सहालग में अच्छी बिक्री की उम्मीद से जो सामन लानकर सजाया गया था वह कैसे ही पड़ा है। गंग मेला



हिन्दुस्तान का इतिहास

कानपुर से प्रकाशित

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें विशेष ध्यान-डॉ संजय कुमार पांडेय



बच्चे-दानी में संक्रमण होना अर्थात तोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना शरीर में हारमोस की कमी होना

कानपुर- चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा कृषि वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में दीवानी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पांडेय ने पशुपालकों के लिए एडवाइजरी जारी की है डॉ पांडेय ने बताया की किसान भाइयों के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है उन्होंने पशु पालकों को सलाह दी है की कोरोना-वायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक भाई मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्म होने पर विशेष ध्यान दें उन्होंने बताया कि अबसर यह देखा गया है कि मादा पशु नियमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भाधान करवाने के बाद भी गर्म नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बारंबार प्रजनन या रिपीट ब्रीड कहते हैं माता पशु के बार-बार गर्म होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि

सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भाधान न होना, पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना मादा पशु की बच्चेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड वाहिनी का बंद होना हिमीकृत वीर्य का अनुचित रखरखाव मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में डॉ संजय पांडे ने पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो तोड़ा या मैला मिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बच्चेदानी की सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बच्चेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गाभिन नहीं हो पाएगी डॉ पांडे ने इसके उपचार हेतु बच्चेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भाधान गन द्वारा 150-200 एम0एल नॉरमल सलाइन अर्थात एनएस द्वारा करवाएं एवं उसके बाद बच्चेदानी की सफाई 1ल (ल्यूगोल आयोडीन) नामक घोल छुड़वा कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर ल्यूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं यदि ल्यूगोल आयोडीन उपलब्ध

नहीं है तो उसके स्थान पर वीटाडीन नामक घोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या तोड़ा साफ है तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है उन्होंने बताया कि पशुओं का दाना चारा पोषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान उसी दिन शाम को करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तो उसकी कृत्रिम गर्भाधान अगले दिन सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि वह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भाधान कर्मी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमीकृत वीर्य का रख-रखाव तटल नत्रजन (लिक्विड नाइट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं कर्मी-कर्मी हिमीकृत वीर्य के रखरखाव में कर्मी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक है तो कृत्रिम गर्भाधान के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरुलोन इत्यादि के इंजेक्शन भी करगर देखे गए हैं परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सफल हो पाते हैं अन्यथा नहीं उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना अति आवश्यक है।

सहजन की पत्तियां बढ़तीं हैं रोग प्रतिरोधक क्षमता

11/05/2021

संवाद न्यूज एजेंसी

अमर उजाला कानपुर देहात

फली व फूल भी होते पोषक तत्वों से भरपूर

शिवली। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहजन की पत्तियां बेहद कारगर हैं। सब्जी, दाल के साथ पकाकर इन्हें खाया जाता है। वहीं, सहजन की फली व फूल पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। ये बातें कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार ने सोमवार को अनूपपुर गांव में बताईं। उन्होंने किसानों को सहजन की फलियां भी वितरित कीं।

उन्होंने कहा कि कोरोना वायरस से बचाव के लिए शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होनी चाहिए। सहजन में प्रचुर मात्रा में विटामिन, मिनरल, प्रोटीन व एंटी ऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं, इसीलिए सहजन को सुपर फूड भी कहा जाता है।

अनूपपुर में कृषि वैज्ञानिकों ने 70 किसानों को सहजन की



सहजन की फलियां तुड़वाते कृषि वैज्ञानिक। संवाद

संतरे के मुकाबले सात गुना अधिक विटामिन सी

सहजन में संतरे के मुकाबले सात गुना ज्यादा विटामिन सी होता है। कृषि वैज्ञानिक डॉ. अरविंद कुमार ने बताया कि सहजन में केले के मुकाबले 14 गुना ज्यादा पोटेशियम पाया जाता है। गाजर की तुलना में 10 गुना ज्यादा बीटा-कैरोटीन होता है। यह आंखों, त्वचा के लिए अच्छा है। दूध के मुकाबले 17 गुना ज्यादा कैल्सियम और पालक के मुकाबले 25 गुना ज्यादा आयरन पाया जाता है।

फलियां वितरित की। इसके अलावा दिलीप नगर केंद्र पर आने वाले ग्रामीणों को भी सहजन की फलियां वितरित की जा रही हैं।

लोगों को सहजन का पेड़ घर में लगाना चाहिए। कृषि वैज्ञानिक डॉ. अरविंद कुमार व डॉ. राजेश राय भी मौजूद रहे।

बकरी के दूध से बढ़ती प्रतिरोधक क्षमता

शिवली। बकरी का ढाई सौ ग्राम दूध रोजाना पीने से रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ती है। इससे इम्युनिटी सिस्टम भी मजबूत होता है। साथ ही कोरोना वायरस से लड़ने की क्षमता को भी बढ़ती है। यह दावा दिलीप नगर कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. चंद्रकेश राय ने किया है।

उनका कहना है कि 2004 में

एक रिसर्च के दौरान फेफड़ों से संबंधित बीमारियों के इलाज में भी बकरी के दूध का प्रयोग सफल माना गया था। इसके सेवन से खून में प्लेटलेट्स की संख्या में भी इजाफा होता है।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश पर कोविड-19 की दूसरी

लहर के संक्रमण से जूझ रहे लोगों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. राय ने बताया कि कोरोना वायरस का प्रकोप उन लोगों में ज्यादा हो रहा है। जिनकी रोग प्रतिरोध क्षमता कम है। रोग से बचाव के लिए भारत सरकार के आयुष मंत्रालय लोगों को प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर जोर दे रहा है। (संवाद)



वर्ष : 8, अंक : 40 वृत्त : 12
काठपुर मध्यम, मण्डला
11 मई, 2021
मूल्य ₹ 2.00

शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

www.shashwatimes.com

भारत के विरुद्ध उग्र उग्राने वाले केपी ओडी एवं विरुद्ध साधक...

मादा पशुओं के गर्भधारण न करने पर पशुपालक दें विशेष ध्यान : डॉ संजय कुमार पांडेय

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रसेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा कृषि वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में सोमवार को टीवाणी रोड नगला निरंजन स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ संजय कुमार पांडेय ने पशुपालकों के लिए एडवार्सरी जारी की है। डॉक्टर पांडेय ने बताया कि किसान भाइयों के लिए पशु महत्वपूर्ण धन होते हैं जिससे उन्हें पूरे वर्ष अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती रहती है। उन्होंने पशुपालकों को सलाह दी है कि कोरोनावायरस संक्रमण के दौरान पशुपालक भाई मादा पशु के गर्भ न धारण करने पर बार-बार गर्भ होने पर विशेष ध्यान दें। उन्होंने बताया कि अक्सर यह देखा गया है कि मादा पशु निर्वमित रूप से लगभग 21 दिनों के अंतराल में हर बार हीट या गर्मी में तो आती है परंतु कई बार उसका कृत्रिम गर्भधारण करवाने के बाद भी वह गर्भधारण नहीं कर पाती। यदि मादा पशु तीन बार से अधिक कृत्रिम गर्भधारण करवाने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है तो उसे पशुपालन विज्ञान की भाषा में बारबार प्रजनन या रिपीट



बीटर कहते हैं। मादा पशु के बार-बार गर्भ होने पर इसके कारणों पर उन्होंने विस्तार से जानकारी दी उन्होंने बताया कि बन्धेदानी में संक्रमण होना अर्थात् छोड़े या मैले में मवाद के छोटे-छोटे कण अथवा उसमें पीलापन होना, शरीर में हार्मोन की कमी होना, सही समय पर मादा पशु का कृत्रिम गर्भधारण न होना, पशु आहार में आवश्यक तत्वों जैसे कि खनिज लवण इत्यादि की कमी होना, मादा पशु की बन्धेदानी में जन्मजात विकार होना जैसे कि अंड चिड़िनी का बंद होना, हिमोक्त वीर्य का अनुचित रखरखाव। मादा पशुओं में इस रोग की रोकथाम एवं उपचार के बारे में डॉक्टर संजय पांडे ने

पशुपालकों को बताया कि सबसे पहले मादा पशुओं ने जो लोड़ा या मैला गिराया है उसे ध्यानपूर्वक देखें यदि उसमें पीलापन या मवाद के छोटे-छोटे कण हैं तो उसकी बन्धेदानी को सफाई करवाना आवश्यक है क्योंकि मवाद और शुक्राणु अर्थात् वीर्य एक दूसरे के दुश्मन हैं यदि बन्धेदानी में मवाद है या संक्रमण है तो मादा पशु गर्भिन नहीं हो पाएगी। डॉक्टर पांडे ने इसके उपचार हेतु बन्धेदानी की सफाई कृत्रिम गर्भधारण गन द्वारा 150-200 ml नॉर्मल सल्वन अर्थात् एनएस द्वारा करवाएं। एवं उसके बाद बन्धेदानी की सफाई 1 प्रतिशत Lugol's Iodine (स्पूगोल आयोडीन) नामक घोल छुड़वा



कर करवानी चाहिए, जो कि 2 मिलीलीटर स्पूगोल आयोडीन को 198 मिलीलीटर डिस्टिल वाटर में घोलकर तैयार करके कर सकते हैं। यदि Lugol's Iodine उपलब्ध नहीं है तो उसके स्थान पर Betadine (बीटाडीन) नामक घोल का इस्तेमाल कर सकते हैं तथा उस बार की हीट छोड़ देनी चाहिए। अगली हीट में यदि मादा पशु का मैला या लोड़ा साक है तभी उसकी एआई करवानी चाहिए है। उन्होंने कहा कि पशुओं का घना चारा चेषक तत्वों से भरपूर होना चाहिए एवं उसमें सभी प्रकार के घटकों का उचित मात्रा में समावेश होना चाहिए। उन्होंने पशुपालकों को यह भी सलाह दी कि मादा पशु

यदि सुबह हीट में आया है तो उसकी कृत्रिम गर्भधारण उम्मी दिवस शाम को करवा लेनी चाहिए और इसके विपरीत यदि शाम को हीट अथवा गर्मी में है तो उसकी कृत्रिम गर्भधारण अगले दिवस सुबह अवश्य करवा लेनी चाहिए। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि यह ध्यान रखें कि कृत्रिम गर्भधारण कभी अथवा एआई करने वाला पशु मित्र हिमोक्त वीर्य का रख-रखाव तरल नम्रजन (लिक्विड नॉट्रोजन गैस) में ठीक प्रकार से कर रहा है या नहीं। कभी-कभी हिमोक्त वीर्य के रखरखाव में कमी के कारण उसकी गुणवत्ता खराब हो जाती है जिसके कारण मादा पशु गर्भधारण नहीं कर पाते। उन्होंने कहा कि यदि उपरोक्त सारी चीजें ठीक हैं तो कृत्रिम गर्भधारण के साथ-साथ हार्मोन जैसे रिसेप्टल, कोरुलोन इत्यादि के इंजेक्शन भी कारगर देखे गए हैं, परंतु यदि पशु का खानपान एवं शरीर भार ठीक है तभी हार्मोन के इंजेक्शन सकल हो पाते हैं अन्यथा नहीं। उन्होंने पशुपालकों से अपील की है कि इसके अतिरिक्त समय समय पर पशु चिकित्सक को सलाह लेना अति आवश्यक है।